पाठ 13

होनहार लइका नरेन्द्र

पाठ परिचय– हमर देश म कतकोन संत महात्मा, गियानी–धियानी होय हें, जिंखर गुण ह नानपन ले दिखे ल धर लय। अइसने ए पाठ म विवेकानंद के नान्हेपन के एक ठन गुन ल जानबोन।

लइका हो! ध्यान देके सुनव जी! नरेन्द्र नाँव के एक झिन लइका रहिस। ओ अपन जनम लेय के बेरा ले आन लइका मन ले अलग दिखय। ओकर फक गोरिया देंह, चौरस माथा, पातर–पातर अउ लम्हरी अँगरी, गोल–गोल सुग्घर आँखी सबके मन ल मोह लय। नरेन्द्र जइसे–जइसे बड़े होवत गिस तइसे–तइसे ओकर भीतर के गुण उजागर होवत गिस।

ओकर दाई–ददा के चार झिन बेटी रहिन फेर दू बेटी के इन्तकाल हो गे रहिस। इँकर बाद नरेन्द्र के जनम होय रहिस। ओहर अब्बड़ होनहार रहिस। ते पाय के ओहा सबे बर मयारू रहिस।

नान्हेपन में ओकर गुण के लक्षण दिखे बर धर ले रहिस। एकर बहुत अकन किस्सा हे, फेर ए मेर एक ठिन किस्सा मँय हर तुमन ल बतावत हँव।

नरेन्द्र ह स्कूल म भर्ती होगे रहिस तब के बात आय। गुरुजी इतिहास पढ़ावत रहिस। ओहर अतेक अच्छा ढंग से पढ़ावत रहिस कि सबे लइका मन ध्यान देके सुनत रिहिन। फेर गुरुजी देखिस कि नरेन्द्र के ध्यान कोन जनी कहाँ रहिस ? ओखर आँखी आधा मुँदाए रहिस अउ ओहर हालत–डोलत नइ रहिस। गुरुजी ओला देखिस ते ओला बड़ा रिस लागिस। ओहर सोंचिस कि देख ए लइका ल मँय अतेक सुग्घर पढ़ावत हँव अउ ए ह उँघावत बइठे हे। अइसन सोंच के गुरुजी भड़क गे। घुस्सा के मारे ओकर आँखी लाल होगे। ओहर बड़ जोर से खिसियाके नरेन्द्र ल कहिस–''कस रे मूरुख। कक्षा में बइठके सुतत हस रे। अरे ! पढ़इ–लिखइ से अतके दुश्मनी हे तब इहाँ काबर आथस?''

शिक्षण संकेत – पाठ ल पहिली गुरुजी ह हाव–भाव ले पढ़यँ। फेर लइका मन ओला सुनके ओइसनेच दुहरावय। पाठ म आए मुहावरा के मायने बतावँय अउ ओकर प्रयोग करवाय। कठिन शब्द ल कापी म लिखँय अउ बने पढ़े बर बतावँय। अपन राज या देश के महान मनखे के लइकापन म घटे कोनो घटना के जानकारी गुरुजी बतावय।

गुरुजी के गोठ ल सुन के नरेन्द्र ल बने नइ लागिस। ओला अइसे लागिस, जइसे गुरुजी ओकर हिनमान करत हे। नरेन्द्र ह तो आँखी ल मुँदे–मुँदे ध्यान लगाके गुरुजी के सबो बात ल सुनत रहिस। गुरुजी के घुस्सा के बलदा म नरेन्द्र ह थोरिक मुसकिया के कहिस–''मँय सुतत नइ हँव गुरुजी जागत हँव।'' ओकर बात ल सुन के गुरुजी सकपकागे अउ नरेन्द्र के मुँह ल देखे ल धर लिस। ओ हा मने–मन सोंचे लगिस के यहा काए भाई अइसन किस्सा तो मँय ह न सुने रेहेंव न देखे रेहेंव। गुरुजी के घुस्सा उतरगे। ओहा बहुत मया करके नरेन्द्र ल कहिस– ''त अइसने सुते अस काबर बइठथस बेटा? देख मँय ह फोकट म तोर उपर खिसियागेंव न? रिस झन मानबे बाबू। तँय हर तो बड़ा होनहार लइका अस बेटा। सरस्वती माता सदा तोर उपर छाहित राहय।''

ये किस्सा ल सुना के गुरुजी लइका मन ल किहिस त लइका हो! तुमन जानत हव, ए नरेन्द्र कोन ए तेन ल? नइ जानव? उही नरेन्द्र ह बड़े होके 'स्वामी विवेकानन्द' कहइस अउ चारों मुड़ा देश–बिदेश म हमर भारत देश के नाँव ल उज्जर करिस। छत्तीसगढ़ ले घलो स्वामी विवेकानंद के नाँव ह जुड़े हे। स्वामी विवेकानंद ह रायपुर म घलो रहिस। वोहा दू बछर ले अपन महतारी–बाप के संग म बूढ़ापारा म राहत रहिस।

कठिन शब्द मन के हिन्दी मायने–

शब्द	मायने
होनहार	उज्ज्वल भविष्यवाला
किस्सा	कहानी
उँघाना	ऊँघना, नींद लेना
हिनमान	अपमान

प्रश्न अउ अभ्यास–

प्रश्न 1– खाल्हे म लिखाय प्रश्न के उत्तर लिखव–

1. नरेन्द्र काखर नाँव रहिस ?
2. नरेन्द्र कक्षा म का करत रहिस ?
3. गुरुजी नरेन्द्र उपर काबर घुसियागे ?
4. गुरुजी के घुस्सा कइसे उतरगे ?
5. नरेन्द्र कइसन लइका रहिस ?
6. आगू चल के नरेन्द्र ल का नाँव ले जाने गिस ?

प्रश्न 2–कोन ह कोन ल कहिस ?

1. ''कस रे मुरुख ! कक्षा म बइठके सुतत हस रे?''
2. ''मँय तुँहर ले जादा जागत हँव।''
3. ''त अइसने सुते अस काबर बइठथस बेटा?''

भाषा–अध्ययन अउ व्याकरण–

प्रश्न 1. खाल्हे लिखाय कठिन शब्द ल लिखव अउ पढ़व–

लच्छन　　गुस्सा　　सरस्वती　　नरेन्द्र

सकपकागे　　विवेकानन्द　　इन्तकाल

प्रश्न 2. उलटा अर्थ वाले शब्द लिखव–

हिनमान　　गुन

गुस्सा　　दुश्मनी

देश　　जनम

प्रश्न 3. वाक्य म प्रयोग करव–

नान्हेपन　　गुस्सा　　गुरुजी　　उज्जर

प्रश्न 4. चार संघरा शब्द खोजव अउ लिखव–

जइसे – पढ़इ–लिखइ

मुहावरा–

1. आँखी लाल होना – क्रोधित होना।
2. मुँह ललियाना – गुस्से या शर्म से मुँह लाल हो जाना।
3. सकपकाना – सहम जाना।

योग्यता विस्तार–

1. अइसे चार बखत के नाम लिखव, जेन बेरा जोर से बोलना पड़थे।
2. स्वामी विवेकानंद ल छोंड़ के दू झन अउ महापुरुस मन के बचपन के कोनो बने बात खोज के कक्षा म सुनावव।
3. अपन गुरूजी ले पूछव के ए जघा मन के स्वामी विवेकानंद ले का सम्बंध हे–

(1) शिकागो　　(2) कलकत्ता

3Z28M2